www.vidarbhakibaat.in

Post Reg. No. RNP/NPCITY/169/2015-2017

प्रखर...मुखर...स्वर

विदर्भ की बात SUNDAY

● वर्ष 17 ● अंक 106 नागपुर, रविवार, 12 मार्च 2017 ● पृष्ठ 8 ● मूल्य ₹ 2

मोदी मैजिक से केसरिया रंग में डूबी भाजपा

यूपी-उत्तराखंड में भाजपा की ऐतिहासिक जीत

पंजाब में लौटी कांग्रेस

गोवा-मणिपुर में कांग्रेस को ज्यादा सीटें, लेकिन बहुमत नहीं

नई दिल्ली

भाजपा ने उत्तरप्रदेश एवं उत्तराखंड विधानसभा चुनावों में बिखरे हुए विपक्ष को बुरी तरह मात देते हुए शनिवार को धमाकेदार जीत दर्ज की। भाजपा नेताओं ने इस जीत का श्रेय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की लोकप्रियता को देते हुए इसे उनकी गरीब समर्थक नीतियों की जीत बताया।

मतगणना लगभग समाप्त होने के समय गोवा एवं मणिपुर में भाजपा कांग्रेस के साथ करीबी टक्कर में चल रही थी। कांग्रेस के लिए पंजाब से राहत की खबर मिली जहां उसका सरकार बनाना अब तय हो चुका है। मोदी की अगुवाई में भाजपा ने उत्तरप्रदेश में सत्ता से 15 साल के बनवास के बाद अपनी धमाकेदार वापसी की है। चुनाव में सपा एवं बसपा का बहुत खराब प्रदर्शन रहा। राज्य की 403 विधानसभा सीटों में भाजपा गठबंधन को 324 सीटों पर जीत मिली है। उत्तरप्रदेश में यह अभी तक किसी भी पार्टी को मिला सबसे बड़ा जनादेश है। सपा गठबंधन को 54 सीटें मिली हैं, जबकि कांग्रेस 7 सीटें जीतने में कामयाब हुई है। बसपा के खाते में सिर्फ 19 सीटें गई हैं।

पार्टी नेताओं ने इस सफलता का श्रेय मोदी को दिया। मोदी और पार्टी अध्यक्ष अमित शाह ने 2014 के संसदीय चुनाव की तरह इस बार भी भारी सफलता पाने के लिए कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर कड़ी मशक्कत की। नेशनल कांफ्रेन्स नेता उमर अब्दुल्ला ने नतीजों को सुनामी करार दिया और भविष्यवाणी की कि भाजपा न केवल 2019 बल्कि 2024 में भी संसदीय चुनाव जीतने की स्थिति में है।

उत्तरप्रदेश में चुनावी रणनीति को बनाने एवं उसे अंजाम देने वाले शाह ने कहा कि इस जीत ने मोदी को आजादी के बाद सबसे बड़े नेता का दर्जा प्रदान कर दिया है। भाजपा प्रमुख शाह ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि जीत का एकमात्र कारण मोदी सरकार का कामकाज रहा। उन्होंने कहा कि नतीजों ने मोदी में गरीब लोगों के भरोसे को दिखा दिया है। उनके राजनीतिक विरोधियों तक को स्वीकार करना होगा कि देश की आजादी के बाद वह सबसे बड़े नेता बनकर उभरे हैं। उन्होंने ट्वीट कर कहा, यह मोदी के नेतत्व में भ्रष्टाचार मुक्त शासन एवं गरीब समर्थक नीतियों की जीत है। उत्तराखंड में कुल 70 सीटों में से भाजपा को 57 सीटें मिली हैं। कांग्रेस 11 सीटों के साथ दूसरे स्थान पर है। कांग्रेस के मुख्यमंत्री हरीश रावत दोनों सीटों से चुनाव हार गए। कांग्रेस 117 सदस्यीय पंजाब विधानसभा में 77 सीटें जीतकर स्पष्ट रूप से विजेता है। भाजपा तीन सीटों के साथ चौथे स्थान पर रही। आप 20 सीटों के साथ दूसरे स्थान पर है। अकाली दल को 15 सीटें मिली हैं। इन नतीजों के कारण भाजपा के कायार्लयों और पार्टी के दबदबे वाले क्षेत्र में जश्न मनाया जा रहा है। पार्टी के सदस्यों ने सड़कों और भाजपा कायार्लयों में मिठाई बांटी और नाच कर जीत की खुशी व्यक्त की। पार्टी के एक नेता ने कहा कि होली जो रविवार और सोमवार को मनायी जाने वाली थी, उसे एक दिन पहले मनाया जा रहा है।

केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने उत्तरप्रदेश में पार्टी कायार्लय में मनायी जा रही खुशियों के बीच कहा कि भाजपा उत्तराखंड एवं उत्तरप्रदेश में एक नई ऊंचाई पर पहुंच गई है और देश की राजनीतिक तस्वीर को बदल दिया है। बीजेपी ने राम मंदिर लहर के बीच 1991 के विधानसभा चुनाव में कल्याण सिंह के नेतृत्व में 221 सीटों पर जीत दर्ज की थी। इस चुनाव में बीजेपी ने अपने सारे पुराने रिकॉर्ड को ध्वस्त कर दिया है। 403 विधानसभा सीटों में बीजेपी को 324 सीटें मिली हैं, वहीं कांग्रेस-समाजवादी पार्टी गठबंधन को 55 सीटें हासिल हुई हैं। 2014 के लोकसभा चुनाव में एक भी सीट नहीं जीतने वाली मायावती की पार्टी बसपा का हाल बुरा रहा। बसपा का यह पिछले 25 सालों में सबसे बुरा प्रदर्शन है। बसपा सिर्फ 19 सीटें हासिल कर पाई है, जबकि 1991 में उसे 12 सीटें मिली थीं।

उत्तराखंड में सारे रिकॉर्ड टूटे

उत्तरप्रदेश के अलग होने के बाद उत्तराखंड का यह चौथा विधानसभा चुनाव है। 70 विधानसभा सीटों वाले राज्य में आज तक किसी दल ने 40 का आंकड़ा पार नहीं किया था। बीजेपी ने 57 सीट जीतकर प्रचंड बहुमत हासिल किया है। कांग्रेस को सिर्फ 11 सीटें मिली हैं और 2 सीटें अन्य के खाते में गई हैं। यूपी की तरह ही बीजेपी ने उत्तराखंड में सीएम पद का चेहरा नहीं दिया था और पार्टी पीएम मोदी के नेतृत्व में चुनाव लड़ रही थी। मोदी लहर के सामने सीएम हरीश रावत भी हरिद्वार ग्रामीण सीट से विधानसभा चुनाव हार गए।

पंजाब में अमरिंदर-सिद्धू की जोड़ी का धमाल

पंजाब में कांग्रेस ने अमरिंदर सिंह के नेतृत्व में शानदार प्रदर्शन किया है। 117 सदस्यीय विधानसभा सीटों वाले राज्य में कांग्रेस को 77 सीटें मिली हैं। लगातार पिछले दो विधानसभा चुनाव जीतने वाली शिरोमणि अकाली दल और बीजेपी गठबंधन सिर्फ 18 सीटें जीत सकी है, वहीं एग्जिट पोल में बेहतर प्रदर्शन करने वाली आम आदमी पार्टी महज 20 सीटें जीत सकी। राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार चुनाव से पहले नवजोत सिंह सिद्धू का बीजेपी को छोड़कर हाथ का दामन थामना कांग्रेस पार्टी के लिए फायदेमंद रहा।

मणिपुर में कांग्रेस आगे

पिछले विधानसभा में बीजेपी यहां खाता खोलने में असफल रही थी। इस बार पीएम मोदी के नेतृत्व में बीजेपी को 22 सीटें मिली हैं। हालांकि यहां सर्वाधिक 28 सीटें जीतकर कांग्रेस सबसे बड़ा दल बना है। हालांकि 2012 के चुनाव में सीएम इबोबी सिंह के नेतृत्व में कांग्रेस ने 46 सीटें जीतकर शानदार प्रदर्शन किया था। राज्य में इरोश शर्मिला पर पूरे देश की नजर थी, लेकिन उन्हें इबोबी सिंह के हाथों हार का सामना करना पड़ा।

गोवा में कांग्रेस आगे

गोवा में किसी को भी बहुमत हासिल नहीं हुआ है। रक्षा मंत्री मनोहर पर्रिकर के राज्य में बीजेपी को 13 सीटें हासिल हुई हैं। 40 सदस्यीय विधानसभा सीटों वाले राज्य में कांग्रेस ने सर्वाधिक 17 सीटें जीती हैं। इस राज्य में त्रिशंकु की स्थिति बनी है। 2012 में राज्य में बीजेपी को जीत दिलाने वाले मनोहर पर्रिकर लोकसभा चुनाव के बाद केंद्र में आ गए। जमीनी नेता की छवि रखने वाले पर्रिकर की विरासत में लक्ष्मीकांत पारसेकर आगे बढ़ाने में असफल रहे। बीजेपी मुख्यमंत्री पारसेकर को खुद अपनी ही सीट से हार का सामना करना पड़ा।

भाजपा की जीत नेताओं व कार्यकर्ताओं की जीत है - संचेती

नागपुर

पांच राज्यों में आये चुनाव परिणामों के बाद राज्यसभा सांसद अजय संचेती ने कहा कि चार राज्यों में भाजपा की जीत ने यह स्पष्ट दर्शा दिया है कि जनता में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आदर्श छवि बरकरार है।

भारतीय जनता पार्टी की ऐतिहासिक जीत दरअसल पार्टी के बड़े नेताओं के साथ ही सभी कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम का परिणाम है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति जनता का विश्वास एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह के माइक्रो मैनेजमेंट का ही यह चमत्कार है कि उत्तरप्रदेश जैसे बड़े राज्य व उत्तराखंड में भाजपा ने अपना विजयी परचम लहराया है। गरीबों के लिए कल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन, पारदर्शक कार्यभार के साथ ही जो बोला वह भाजपा ने किया। इस जीत के लिए पार्टी को मेरी शुभकामनाएं।

भाजपा की ऐतिहासिक जीत पर नई दिल्ली स्थित भाजपा मुख्यालय परिसर में जश्न मनाते हुए पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह एवं बड़ी संख्या में हर्षित कार्यकर्तागण।

छत्तीसगढ़ में नक्सलियों ने खेली खून की होली, 11 जवान शहीद

बस्तर

छत्तीसगढ़ के बस्तर में नक्सलियों ने खून की होली खेली है, जहां एक पार्टी पर घात लगाकर हमला किया गया। इस हमले में 11 जवान शहीद हो गए हैं। नक्सलियों ने शहीद जवानों के हथियार और मोबाइल फोन भी लूट लिए। इस घटना से पूरे इलाके में हड़कंप मच गया है।

की 219वीं बटालियन के जवान रोड ओपनिंग के लिए तड़के चार बजे भेज्जी के जंगलों में निकले थे। उन्हें इस बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि भेज्जी इलाके में तीन सौ से ज्यादा नक्सलियों जमावड़ा था। गश्ती दल इस बात से पूरी तरह से बेखबर था। दल एक निर्माण स्थल की तरफ जा रहा था। इससे पहले कि जवान उस जगह तक पहुंच पाते, नक्सलियों ने उन पर फायरिंग शुरू कर दी। जवाब में जवानों ने भी फायर खोल दिया। करीब डेढ़ घंटे तक चली आमने सामने की फायरिंग में नक्सली जवानों पर भारी पड़े। नक्सली संख्या बल में कहीं ज्यादा थे और वे पहाड़ी के ऊपरी हिस्से से फायरिंग कर रहे थे, जिसके चलते उन्होंने के जवानों को गोलियों से छलनी कर दिया। इस घटना में 11 जवान शहीद हो गए, जबकि पांच जवान बुरी तरह से जख्मी हुए हैं। साथ ही 4 जवानों को मामूली चोटें भी आई हैं। राज्य के मुख्यमंत्री रमन सिंह ने इस घटना को नक्सलियों की कायराना हरकत करार दिया है। दरअसल, बस्तर में नक्सलियों ने सड़कों के निर्माण पर पाबंदी लगा रखी है। वो न तो निर्माण एजेंसियों को काम करने देते हैं और ना ही मजदूरों को। लिहाजा सुकमा, दंतेवाड़ा, बीजापुर और कांकेर के जंगलो के भीतर बसे कई गांवों में सड़को के निर्माण का काम पुलिस और केंद्रीय सुरक्षाबलों ने अपने हाथों में ले रखा है। पुलिस ने इस हमले को काफी गंभीरता से लिया है।

यूपी में चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर पस्त

अमित शाह ने लिया बिहार का बदला

नई दिल्ली

समाजवादी नेता राम मनोहर लोहिया ने कभी कहा था कि कमजोर होने के बाद कांग्रेस समाजवादियों की सबसे अच्छी सहयोगी पार्टी साबित होगी। कांग्रेस के हाथ में साइकिल थमाते वक्त चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर के जेहन में भी कुछ ऐसी ही उम्मीद रही होगी, लेकिन वोटरों के दिल में कुछ और था और किशोर को अपने करियर की पहली बड़ी हार का स्वाद चखना पड़ा है। इस जीत के साथ अमित शाह ने बिहार में मिली हार का हिसाब भी चुकता किया है।

यूपी में 'हाथ' से निकली बाजी

ये शायद पहला मौका था जब कांग्रेस के किसी दिग्गज नेता ने क्षेत्रीय नेता की कमान में प्रचार किया, लेकिन प्रशांत किशोर का ये दांव काम नहीं आया।

यूपी में कांग्रेस पहले ही मरणासन्न हालत में थी। प्रशांत किशोर की टीम ने 27 साल, यूपी बेहाल के नारे के साथ राहुल गांधी की खाट यात्रा निकालकर जोर-शोर से पार्टी के प्रचार अभियान का आगाज किया था, लेकिन यात्रा खत्म होते-होते ही ये साफ था कि कांग्रेस अपने बूते किसी सियासी चमत्कार नहीं कर सकती। नतीजों से साफ है कि प्रचार के बीचों-बीच अपने ही स्लोगन के खिलाफ अखिलेश यादव का दामन थामना वोटरों को रास नहीं आया।

जब नेतृत्व नहीं तो जीत कैसे?

2014 का आम चुनाव हों या बिहार विधानसभा चुनाव या फिर पंजाब विधानसभा चुनाव के नतीजे, प्रशांत किशोर का जादू तभी चला जब मैदान में दमदार चेहरा मौजूद था। यूपी में पहले-पहल प्रशांत किशोर ने शीला दीक्षित को सीएम उम्मीदवार बनवाया। उनका इरादा दीक्षित के जरिये कांग्रेस के परंपरागत अगड़ी जाति वोट बैंक का दिल जीतना था। जब ये साफ हुआ कि शीला दीक्षित वोटरों पर असर डालने में नाकाम रही हैं तो किशोर और उनकी टीम ने प्रियंका गांधी को प्रचार की कमान देने की हर मुमकिन कोशिश की, लेकिन प्रियंका ने इस रोल को स्वीकार नहीं किया और कांग्रेस अपनी मुहिम के लिए कोई चेहरा ही नहीं जुटा पाई। पार्टी की नैया डुबोने में रही-सही कसर स्थानीय नेताओं ने पूरी की जो प्रशांत किशोर की सुनने को तैयार नहीं थे।

अमित शाह का बदला

प्रशांत किशोर और अमित शाह दोनों ही चुनावी रणनीति के चाणक्य भले ही माने जाते हों, लेकिन दोनों के बीच मतभेद 2014 के चुनाव से चले आ रहे हैं। कहा जाता है कि अमित शाह को इन चुनावों में मोदी के साथ किशोर की नजदीकी गवारा नहीं थी। एक वक्त था जब प्रशांत किशोर गुजरात में मोदी के आवास पर ही डेरा जमाते थे और कोई भी बड़ा सियासी फैसला लेने से पहले मोदी उनकी राय लेना नहीं भूलते थे। इसी रंजिश का नतीजा था कि मोदी के दिल्ली की सत्ता पर काबिज होने के बाद प्रशांत किशोर ने अचानक जेडीयू का साथ देने का फैसला किया। कहा जाता है कि प्रशांत किशोर मोदी की जीत के बाद पार्टी में बड़ी भूमिका चाहते थे, लेकिन अमित शाह ने ऐसा होने नहीं दिया।